रात्रिक्लास 8/1/69:– गायन है शेर–बकरी इकट्ठे जल पीते हैं। यह एक दृष्टान्त है। बाकी वहां ऐसे कोई होते नहीं। यह दृष्टान्त बनाया हुआ है ऐसे प्रेम से रहना चाहिए। बिल्कुल शान्त। तो इसका नाम रख देंगे टावर आफ साइलेन्स। जा रहे हैं टावर आफ सायलेन्स में। फिर आवेंगे टावर आफ सुख में। शान्तिधाम, सुखधाम दोनों टावर हैं। यहां अशान्त दुःख है इसलिये इनको नर्क हेल कहा जाता है। तुम हेविन स्थापन कर रहे हो। तो जरा भी आवाज न होना चाहिए। इस दुनियां किचड़ा बाकी यह थोड़ा समय है। तैयारियां सभी होती रहती हैं। गड्ढा खोदते रहते हैं फिर फटेंगे। कितने झगड़े मारा–मारी है। कोई सेफ नहीं। जेल में ऐसे जाते हैं जैसे कोई नाना का घर है। आज प्रा0मि0 कल जेल की सजा वा गोली मुंह में। यहां तुम किनारे बैठे हो। बोलो, भारत में शांति थी जबकि एक राज्य था। अभी कितनी अशान्ति है। फिर शान्ति का राज्य होने का है। बच्चे समझते हैं हम निमित्त बनते हैं स्वर्ग की स्थापना करने तो हमको बहुत शान्ति में रहना है। शान्तिधाम सुखधाम की याद में रहना है और सभी को रास्ता बताना है। सुख की हि0जा0 सुनानी है। अभी तुम बच्चों को दिल में है सुख की हि0 जा0 सतयुग त्रेता उनको 2500 वर्ष। फिर द्वापर से रावण राज्य हुआ। फिर बाप सुख की दुनियां बनाते हैं। तुम बच्चों की है ....की बोले या हुसेन। भक्तिमार्ग में कितने चर्याई धक्के खाना आदि है। तुम बच्चों की तो एक ही बात है। अभी तुम रावण राज्य में हो। अभी बाप को याद करना है तो पाप कट जाये। पापात्मा से पुण्यात्मा बनना है। फिर पापात्मा रहेंगे नहीं। तुम संगमयुगी ब्राह्मणों का सारी दुनियां में नाम बाला है। सभी योगबल से अपना सुख–शान्ति का राज्य स्थापन कर रहे हैं। वहां दुःख का नाम नहीं और सभी की है हद की बुद्धि। तुम्हारी कितनी बेहद की बात है। तुम्हारी बुद्धियोग लगा रहता है शान्तिधाम से। समझते हो शान्तिधाम होना है दुःखधाम खलास होना है। ऐसी2 बुद्धि में रहे तो खुशी भी होगी। सजा के लायक अपन को न बनाना है यह है सपूत बच्चों का काम। ज्ञान की मीठी2 बातें ही आपस में करनी है। नहीं तो बहुत घाटा कल्प2 लिये पड़ेगा। अपन को अच्छी रीत सम्भालना है। ओम।